

मंथन के मोती - सप्तम प्रतियोगिता माँ की पाती बेटा के नाम

अखिल भारत वर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन के अंतर्गत सुलेखा समिति की राष्ट्रीय स्तर की सप्तम प्रतियोगिता " माँ की पाती बेटा के नाम " सफलता पूर्वक निर्धारित समय पर संपन्न हुई। पूर्व की छह प्रतियोगिताओं में भी हमारी गुणी-सुधी बहनों ने बहुत अच्छी विचार अभिव्यक्ति एवं लेखन क्षमता का परिचय दिया जो उनकी उच्च क्षमताओं को दर्शा रहा था। विषय चाहे कोई भी हो, साहित्य की कोई भी विधा हो, मानसिक दृढ़ हो, अपने को सिद्ध करने की बात हो, काव्य, कहानी हो या लेख हो सभी पर बहनों ने हमारी मानसिक क्षुधा को बहुत हद तक शांत किया है। इस बार की विधा पत्र लेखन में माँ के ममत्व की भावनाओं का समन्दर हिलोरे ले रहा था। माँ वह गरिमामयी व्यक्तित्व है जिसका गुण गान करते देवता भी नहीं थकते और वही माँ जब अपनी संतान को पत्र लिखती है तो भावनाओं की सीमा नहीं रहती। बस माँ का दिल ही शब्दों में दिखता है जो निसदिन अपनी लाड़ली की मंगलकामना के विषय में ही सोचता है। वैसे तो आज कल बहुत से इलेक्ट्रॉनिक साधन हो गए हैं परन्तु पत्रों ने अभी भी अपना विशिष्ट स्थान बना रखा है। दिल के गहराइयों से लिखे पत्र पढ़ने वालों को खुशी से सराबोर कर देते हैं।

पत्र लेखन प्रतियोगिता की प्रविष्टियों के अध्ययन व मनन के पश्चात सभी लेखिका माँओं के प्रति मन सम्मान से नतमस्तक व अभिभूत हुआ। सभी ने अपने पत्र में उन तमाम अपेक्षाओं, तथ्यों, भावनाओं और अनुराग का समुचित विवरण प्रस्तुत किया जो ऐसे पत्रों से उम्मीद की जा सकती है। हर माँ अपनी प्रिय बेटियों को लेकर जागरूक व सतर्क है। सभी पत्रों में परिष्कृत भाषा, ममता-दुलार, परमर्श-ज्ञान, अपेक्षाओं का सटीक एवं सरस विवरण किया है, जो गागर में सागर समान है। पत्र की मूल विषय वस्तु जिसमें परिवार से जुड़े रहने की भावना, आधुनिकता के प्रति सतर्क अनुकरण की सलाह, मूल संस्कृति के प्रति सम्मान, पारिवारिक आदर्श, स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता, क्षमताओं के विकास की प्रेरणा, भविष्य की आशाएं व मनोकामना सभी कुछ है। इन विषयों पर सभी की सुदृढ़ पकड़ रही।

जो बहनें विजेता रहीं उन्होंने शब्द सीमा का ध्यान रखा। पत्र को लेख और निबंध का रूप न देकर पत्र ही रखा। कई वाक्य अंतस की गहराइयों को छू रहे थे जैसे- " तुम्हारे बिना सब सूना सूना लगता है ", " शाम को खाना बनाने का मन ही नहीं करता है ", " भैया जो हमेशा तुमसे नोक झोक करता था अब चुप सा रहता है, कोई फरमाइश नहीं करता ", " तुम्हारे पापा चुप-चाप तुम्हारे कमरे में जाकर कुछ देर बैठते हैं तुम्हारी चीज़ों को देखते हैं, उनकी आँखें बता देती हैं कि तुम्हारी कमी खल रही है "। अपनेपन से भरे इन पत्रों को पढ़ना सचमुच एक खूबसूरत अनुभव रहा।

पर दूसरी तरफ हमेशा की तरह कई लेखिकाओं ने शब्द सीमा का ध्यान नहीं रखा, पत्र लेखन के सामान्य शिष्टाचार जैसे तारीख, अभिवादन, कुशलक्षेम आदि का ध्यान नहीं रखा। कुछ बहनों ने यह मत करो, वह मत करो की उबाऊ एवं उपदेशात्मक शैली अपनायी। कुछ पत्रों में शारीरिक स्वास्थ्य पर स्त्रीरोग विशेषज्ञ की भांति भाषण प्रक्रिया अपनायी गयी जो अटपटी लगी। पत्रों में "पॉइंट, हैडिंग डालना" इत्यादि नहीं होना चाहिए था। कई लेखिकाओं ने पत्र ससुराल गयी विवाहिता बेटा के नाम लिखे थे जो कि सिरे से नकार दिए गए।

प्रेरणा दायक, भावनात्मक गहराइयों से ओत-प्रोत और दिल को छू लेने वाले पत्र सदैव एक धरोहर के रूप में संग्रहणीय होते हैं और इस प्रतियोगिता में हमें ऐसे कई पत्र पढ़ने को मिले। हमारा प्रदेश अध्यक्षों से सविनय निवेदन है कि अपनी लेखिका बहनों को यह ज़रूर समझाए कि लेखन विषय के अनुरूप हों, शब्द सीमा में हो जिससे कोई अच्छी रचना प्रतियोगिता से बाहर न हो जाए। राष्ट्रीय पदाधिकारियों के निर्देशन और मार्गदर्शन में सुलेखा प्रभारी और संयोजिका मंडल के आपसी सहयोग एवं महती प्रयासों व निर्णायक मंडल के त्वरित काम

करने की क्षमता के फल स्वरुप प्रतियोगिता के निर्णय आप सभी तक निश्चित समयावधि में पहुंच पाते हैं | सुलेखा समिति राष्ट्रीय पदाधिकारियों एवं प्रदेश पदाधिकारी गण के प्रति सम्मान और धन्यवाद प्रकट करती है | हमारी लेखिका बहनों का विशेष आभार जिन्होंने अपनी "कल्पना" की उड़ान को "आशा" के खूबसूरत रचनात्मक पंख दिए हैं | ये उड़ान अनवरत जारी रहे, इसी कामना के साथ

मधु बाहेती

राष्ट्रीय संयोजिका - सुलेखा समिति